ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट

अंक : 15 सहयोग शुल्क : रु.1 मार्च 2018

दिव्यांग सेतु

संपादक : - संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

मैं उत्तरप्रदेश को दिव्यांग नहीं बनने दूंगा, दिव्यांगो को सरकारी नौकरियों में 5 फीसदी आरक्षण

- योगी आदित्यनाथ, मुख्यमंत्री, उत्तरप्रदेश

दिव्यांगता अधिकार विधेयक-2016' को संसद में पास कराने के लिए आंदोलन चलाकर दबाव बनाने में अहम भूमिका अदा करनेवाले

- श्री जावेद आबिदी

ख़ुश रहें और जीवन में ख़ुशियों को आने का मौका भी दें| ईश्वर पे भरोसा रखें और कर्म करते रहें|

- संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

निरामय हेल्थ पॉलिसी

पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेब्रल पाल्सी, ऑटिज्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टिपल डिसेबिलिटी से असरग्रस्त दिव्यांगो को मिल सकती है|
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा|
- रू. २५०/- बी.पी.एल. एवं रु.५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगो के लिए सिंगल प्रीमियम

लाभ

रु. १,००,०००/- तक का इंश्योरेंस मिल सकता है|
(निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

यह प्रीमियम ॐकार फाउन्डेशन द्वारा भरा जाएगा

आवेदन-पत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाण-पत्र/दस्तावेज

सिविल सर्जन का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाण-पत्र

(ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाण-पत्र में जरुरी है)

- वर्तमान की पासपोर्ट साइज़ फोटो
- राशनकार्ड की प्रमाणित कोपी
- निवास स्थान का प्रमाण (राशनकार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
- बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हैं तो)
- बैंक पासबुक की फोटो कोपी (बैंक ISFC कोड के साथ)

संपादकीय

दोस्तों,

होली का त्योंहार आपने खूब उत्साह के साथ मनाया होगा| हाँ, मैं इतनी इच्छा जरूर रखता हूँ कि आपने कम से कम पानी का उपयोग किया होगा| खैर, त्योहारों का मौसम तो धीरे-धीरे चला गया| मार्च एन्डिंग में पूरा देश काम पर लग चूका होगा| थोड़ा चिंता का वातावरण भी रहेगा| पेशन्स बनाये रखियेगा|

इस बार हम आपके लिए दिव्यांग सेतु में कुछ मझेदार आर्टिकल्स लेकर आये है| आपको दिव्यांग अधिकार आंदोलन के दिग्गज जावेद आबिदी के बारे में जानकारी मिलेगी| चूंकि वे नहीं रहे, उसका हम खेद व्यक्त करते है| उनके आंदोलनों की वजह से काफी परिवर्तन भी आया है|

स्पेसिफिक लर्निंग डिसेबिलिटी की भी कुछ चर्चा करेंगे| भारत सरकार द्वारा घोषित २१ प्रकार की डिसेबिलिटी में यह कौन से प्रकार की अक्षमता है उनके बारे में आपको पूरी जानकरी मिलेगी| प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने किस तरह से वैज्ञानिकों से अपील की कि वे दिव्यांगजनों के जीवन में सुधार लाने हेतु आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर भी काम करें|

लर्निंग डिसेबिलिटी से लेकर टेलिफ़ोन के अविष्कार तक की ग्राहम बेल की कहानी और जीवनी से आपको रूबरू होने का मौका मिलेगा| इस अंक से हमने 'राब्ता' नामक एक नयी कोलम शुरू की है| जिसमें आप उन दिव्यांगजनों की सफलता की बात पढेंगे जो कि प्रेरणादायी है और जीवनभर उन्होंने कुछ न कुछ मुकाम हांसिल किया है|

खुश रहें और जीवन में ख़ुशियों को आने का मौका भी दें| इश्वर पे भरोसा रखें और कर्म करते रहें|

दिव्यांग सेतु

मासिक पत्रिका

मार्च : 2018, पृष्ठ संख्या : 16
वर्ष : 02 अंक : 03

प्रेरणास्त्रोत और संपादक

संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

सह-संपादक

मिहिरभाई शाह

मो. 97241 81999

संपर्क-सूत्र

सेवा समर्पण फाउन्डेशन (NGO)

Trust Reg. No. : E/20646/Ahmedabad

००१, ग्राउण्ड फ्लोर, आंगी एपार्टमेन्ट,

अन्नपूर्णा पार्टी प्लाट के सामने,

नया विकासगृह रोड, पालडी,

अहमदाबाद - ३८००९

मो. 99749 55365 9974955125

मुद्रक

प्रिन्ट विजन प्रा. लि.

आंबावाडी बजार, अहमदाबाद-6

079 26405200

नहीं रहे दिव्यांग अधिकार आंदोलन के दिग्गज जावेद आबिदी...

भारत में दिव्यांगों के अधिकार के लिए संघर्ष के लिए आवाज उठाने वाले दिग्गज जावेद आबिदी का देहांत हो गया. **वह 53 साल के थे...**

भारत में दिव्यांगों के अधिकार के लिए संघर्ष के लिए आवाज उठाने वाले दिग्गज जावेद आबिदी का देहांत हो गया| वह 53 साल के थे| नेशनल सेंटर फॉर प्रमोशन ऑफ एम्प्लॉयमेंट फॉर डिसएबल पीपल (एनसीपीईडीपी) की कार्यक्रम प्रबंधक आरती ठाकुर ने सोमवार (5 मार्च) को बताया कि उनका चार मार्च को निधन हो गया था| आबिदी छाती के संक्रमण से ग्रस्त थे| उनके परिवार में मां, छोटा भाई और छोटी बहन हैं|

विकलांगों के प्रतिनिधि के रूप में जाने जाते थे आबिदी

आबिदी के मित्र एवं वरिष्ठ पत्रकार कुर्बान अली ने बताया कि उन्होंने दिव्यांगो के लिए आंदोलन किया और अंतरराष्ट्रीय जगत में उन्हें भारत के दिव्यांगो के प्रतिनिधि के रूप में जाना जाता था| उन्होंने दिव्यांगो को सरकारी नौकरी में आरक्षण देने के लिए सफल आंदोलन किया था| दिल्ली में इसके लिए अधिकतर धरने प्रदर्शन इन्होंने ही आयोजित की थे|

आबिदी ने सांस्कृतिक धरोहरों कुतुब मिनार जैसे जगहों पर व्हीलचेयर ले जाने के लिए व्यवस्था करने का आंदोलन चलाया था| वह 1992 से 1995 तक राजीव गांधी फाउंडेशन से भी जुड़े रहे| वह शुरुआती दिनों में पत्रकार भी थे|

अलीगढ़ में हुआ था जन्म

आबिदी का जन्म 1965 में अलीगढ़ में हुआ था| जावेद आबिदी भारत में दिव्यांग लोगों के खातिर रोजगार संवर्धन के लिए बने राष्ट्रीय केंद्र के निर्देशक और दिव्यांगता अधिकार समूह के संस्थापक थे|

'दिव्यांगता अधिकार विधेयक-2016' को संसद में पास कराने के लिए आंदोलन चला कर दबाव बनाने में भी आबिदी की अहम भूमिका रही थी| उनके भाई आमिर आबिदी ने बताया कि जावेद आबिदी को सोमवार को गुड़गांव में सुपुर्दे खाक किया जाएगा|

दिव्यांग शिविर के अंर्तगत राष्ट्रपति कोविंद और सीएम चौहान की महत्वपूर्ण घोषणाएं

११ फरवरी को ग्वालियर में दिव्यांग मेगा शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें राष्ट्रपति कोविंद और सीएम चौहान ने कई महत्वपूर्ण घोषणाएं की साथ ही राष्ट्रपति कोविंद ने दिव्यांगों का मनोबल भी बढाया। और उनकी हौसला अफजाई भी की।

4271 दिव्यांगों एवं 8108 वृद्धजनों को कृत्रिम अंग वितरित

राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने दिव्यांगजनों से कहा है कि अपनी शारीरिक कमजोरी को जिंदगी पर हावी न होने दें। अपनी प्रतिभा को पहचानें। यही प्रतिभा जिंदगी में आगे बढ़ने का आत्मबल प्रदान करेगी। राष्ट्रपति श्री कोविंद ने आज ग्वालियर में आयोजित नि:शुल्क सहायक उपकरण वितरण समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने दिव्यांगों से कहा कि उपकरण सहयोग के लिये हैं, उन्हें सहारा न बनाएँ। अपनी प्रतिभा और छिपी ताकत को जगाएँ, फिर ये धरती और आसमां आपका होगा।

राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा संयुक्त रूप से दिव्यांगों को सहायक उपकरण मुहैया कराने की योजना समग्र कल्याण की दिशा में समावेशी शिक्षा, कौशल विकास, रोजगार एवं सामाजिक सुरक्षा के लिये किये जा रहे प्रयासों की सराहना की। राष्ट्रपति ने कहा कि दिव्यांग एवं वृद्धजन को सरकार द्वारा अत्याधुनिक सहायक उपकरण मुहैया कराए जा रहे हैं। सरकार इस लक्ष्य के साथ काम कर रही है कि कोई भी दिव्यांग बगैर सहायता के न रहे।

ग्वालियर की तर्ज पर पूरे प्रदेश में चलेगा दिव्यांग मित्र अभियान

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि पण्डित दीनदयाल उपाध्याय की भावनाओं के अनुरूप ग्वालियर में दिव्यांग व वरिष्ठजनों के लिये मेगा शिविर हुआ है। इस आयोजन में सहायक उपकरण वितरण के साथ-साथ 1400 दिव्यांगों को स्वरोजगार, रोजगार तथा नौकरी देने का काम भी किया गया है। उन्होंने कहा कि ग्वालियर जिले में चलाए जा रहे दिव्यांग अभियान की तर्ज पर पूरे प्रदेश में दिव्यांगों के कल्याण के लिये अभियान चलाया जाएगा।

माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने २५ फरवरी के दिन दिव्यांगजनों के जीवन में सुधार लाने हेतु बात कही

मैं वैज्ञानिकों से आग्रह करता हूं कि वे कृत्रिम बुद्धि (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) के माध्यम से हमारे दिव्यांग भाइयों और बहनों के जीवन में सुधार लाएं।

- माननीय प्रधानमंत्री, श्री नरेन्द्र मोदी

सूरत में वैलेंटाइन डे के दिन 25 दिव्यांग जोड़े बने एकदूजे के हमसफ़र

बुधवार को वैलेंटाइन डे के मौके पर सूरत में एक सोशल ग्रुप ने 25 दिव्यांग जोड़ों की शादी करा दी। ये शादी काफी चर्चाओं में रही, क्योंकि शादी कराने का दिन वैलेंटाइन डे चुना गया।

ये शादी समारोह सूरत में सिटीलाइट स्थित अग्रसेन भवन में आयोजित किया गया और इस समारोह का आयोजन अग्रवाल सेवा ट्रस्ट की तरफ से किया गया। विवाह सम्मेलन सब कुछ रीति-रिवाज के साथ हुआ। सभी रस्में निभाई गई तो वहीं दूल्हा-दुल्हन को भी पारंपरिक कपड़ों और गहनों से तैयार किया गया।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने कहा की, 'मैं उत्तर प्रदेश को दिव्यांग नहीं बनने दूंगा'

उत्तर प्रदेश में भी दिव्यांगों के अच्छे दिन शुरू हो रहे हैं, उन्हे सरकारी नौकरी में 4 प्रतिशत आरक्षण की सुविधा उपलब्ध होगी। योगी कैबिनेट ने इस बाबत प्रस्ताव पर मुहर लगा दी है और अब यूपी में दिव्यांगों को सरकारी नौकरियों में 4 फ़ीसदी आरक्षण मार्च से मिलेगा। उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने इसकी जानकारी देते हुए बताया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इसकी घोषणा कर दी है और यह व्यवस्था अब लागू होगी। गौरतलब है कि गोरखपुर में पिछले दिनों एक शिक्षण संस्थान में कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने दिव्यांगों को सुविधाएं देने के लिए ऐलान किया था, अब उसी अनुक्रम में यह व्यवस्था लागू की जा रही है।

उच्च शिक्षा संस्थानों में 5 प्रतिशत

यूपी के उच्च शिक्षा संस्थानों में अब 5 परसेंट आरक्षण की सुविधा दिव्यांगों को मिलेगी। यह आरक्षण दिव्यांगों को उच्च शिक्षा संस्थानों में दाखिले की प्रक्रिया के दौरान मिलेगा। यानी दिव्यांग जब उच्च शिक्षण संस्थान में दाखिला लेना चाहेंगे तो उन्हे 5 फ़ीसदी आरक्षण के तहत सीटें मिल जाएंगी। संदेश साफ है कि दिव्यांगों के लिए सरकार अब उच्च शिक्षा का रास्ता और अधिक सुगम कर रही है। दरअसल केन्द्र सरकार ने दिव्यांगों के लिये यह फैसला पहले ही ले रखा है और उसी अनुक्रम में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने उत्तर प्रदेश में सरकारी नौकरियों में दिव्यांगों को 4 फ़ीसदी आरक्षण व उच्च शिक्षा संस्थानों में दाखिले की प्रक्रिया के दौरान 5% आरक्षण देगी।

हर सोमवार बनेगा प्रमाण पत्र

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सभी जिलों के सीएमओ को इस अनुक्रम में आदेश जारी किया है कि वह हर सोमवार को दिव्यांगों के लिए प्रमाण पत्र जारी करने की व्यवस्था को सुनिश्चित करें, ताकि कोई भी दिव्यांग आरक्षण का लाभ उठाने के लिए प्रमाणपत्र की अनुपलब्धता से न जूझे। दरअसल अभी तक दिव्यांगों के अधिकांश मामले में यही सामने आता रहा है कि उनके पास दिव्यांग होने का प्रमाण पत्र उपलब्ध नहीं रहता जिसके कारण उन्हें आरक्षण नहीं मिल पाता है। ऐसे में सरकार ने अब हर जिले में सीएमओ को प्रत्येक सोमवार को दिव्यांगता प्रमाण पत्र जारी करने का निर्देश दिया है।

स्पेसिफिक लर्निंग डिसेबिलिटी (अधिगम अक्षमता)

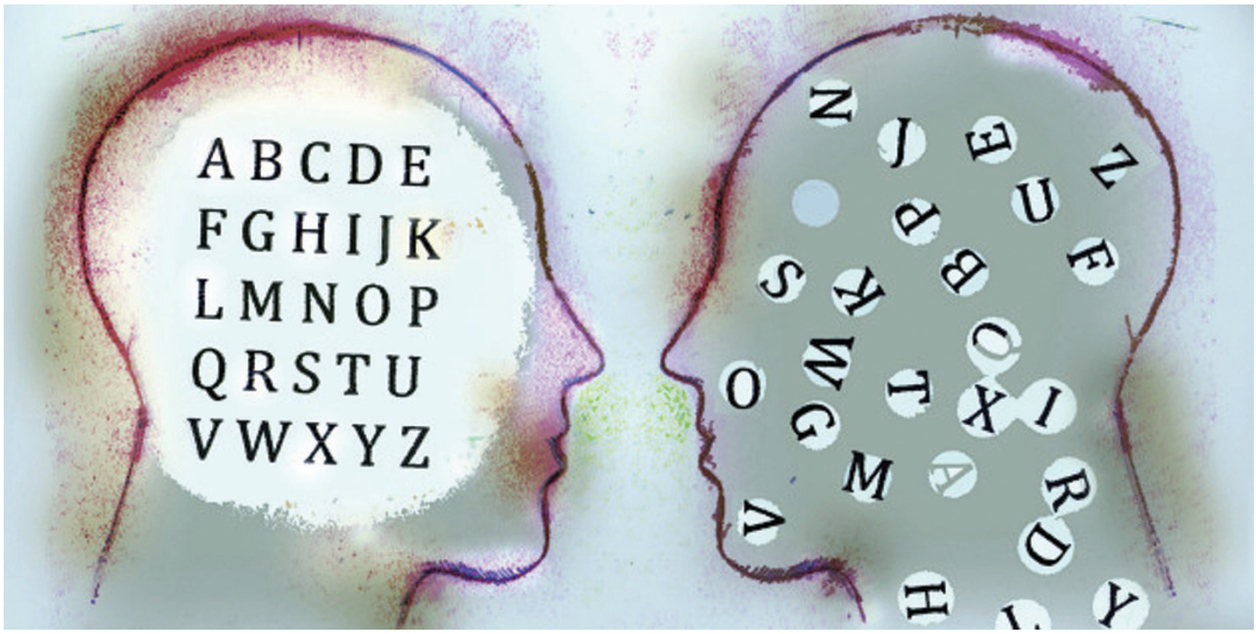

ऐसे बालक जो सुनने, बोलने, पढ़ने, लिखने, तर्क करने, गणितीय योग्यताओं को सीखने तथा उनका दैनिक जीवन में प्रयोग लाने में गहन कठिनाइयों का सामना करते हैं, उनके लिए शिक्षा का मौलिक अधिकार वरदान होते हुए भी अभिशाप निरूपित हो सकता है| क्योंकि अभिभावकों एवं शिक्षकों को बालक की अधिगम अक्षमता का पता नहीं चलेगा। अभिभावक यह सोच कर आत्म संतुष्ट होगें की बालक पास होता जा रहा है इसका मतलब वह अच्छा पढ़ रहा है| शिक्षक उसे इसलिए नहीं रोक रहा है क्योंकि छात्र को अनुत्तिर्ण करने का प्रावधान ही नहीं है| इन दो सोच के बीच मंद गति से लिखने वाले बालक में अधिगम कला का अभाव हो जाएगा और कालांतर में वह उच्च शिक्षा से वंचित भी रह सकता है।अत: शिक्षण जगत से जुड़े सभी स्तंभों की नैतिक जवाबदारी बनती है कि इस विषय पर चिंतन किया जाए तथा समय रहते निदान खोजा जाए।

अधिगमन अक्षम बालकों की पहचान

शिक्षक, प्राचार्य एवं अभिभावक के लिए यह अनिवार्य हो जाता है कि ऐसे बालकों की पहचान शिक्षण सत्र के प्रथम माह में ही कर ली जाए ताकि उनकी शैक्षिक, सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक कठनाईयों को समझने तथा उनके समाधान में आसानी हो सके| स्मरण रहे अधिगम अक्षमता वाले बालक शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ और सामान्य बुद्धि-लब्धि अथवा उच्च बुद्धि-लब्धि के भी हो सकते हैं| बस इनकी सीखने की गति अत्धियाक धीमी तथा शैक्षिक प्रगति असंतोषजनक होती है| अभिभावक तथा शिक्षक इनके प्रगतिप्राय: से नाखुश एवं असंतुष्ट रहते है|

अधिगम अक्षम बलकों की पहचान

- एसे बालक प्राय: अत्धियाक चिन्तित रहने वाले तथा मुड़ी स्वभाव के होते हैं|
- ऐसे बालक एक अथवा अनेक व्यावहारिक समस्याओं से ग्रस्त पाए जाते हैं।
- ऐसे बालक कक्षा से बाहर इधर-उधर घूमने में अधिक

रुचि रखते हैं|

- ऐसे बालक भाषायी कौशलों यथा सुनने बोलने , पढ़ने व लिखने कि दक्षता प्राप्त करने में कठिनाई का अनुभव करते हैं|
- ऐसे बालक कक्षा शिक्षण के दौरान ध्यान को एकाग्र नहीं कर पाते हैं| फलतः सुचनाओं को व्यवस्थित कराने में कठिनाई का सामना कराते हैं|
- इस प्रकार के बालकों में अत्यधिक व्यग्रता तथा अनावश्यक उत्तेजना देखने को मिलती है|
- ऐसे बालकों में अंहम भाव अधिक देखने को मिलते हैं तथा ये संवेगात्मक समस्याओंसे ग्रसित होते हैं।
- अधिगम अक्षम बालकों में स्मृती, सामान्य अंग संचालन एवं नियंत्रण, प्रत्यक्षीकरण तथा क्रियाओं के उचित संवाहन एवं सम्पादन सम्बन्धी दोष भी देखने को मिलते हैं|
- ऐसे बालकों में भाई-बहन तथा सह-पाठियों में समायोजन की समस्या होती है|
- ऐसे बालक किसी खेल अथवा विषय अथवा रुचि को अधिक समय तक स्थाई नहीं रख पाते हैं| इनकी जिज्ञासा जल्दी शांत हो जाती है तथा ये अपनी रुचि कहीं ओर मोड देते हैं|

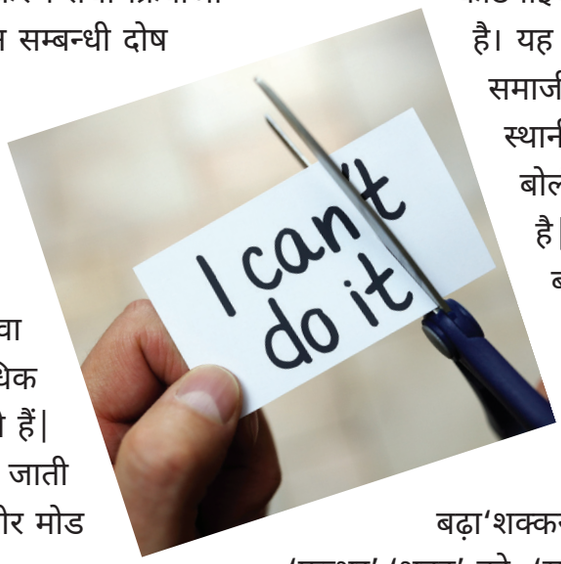

- अधिकांश अधिगम अक्षम बालकों में न्यूरोलॉजिकल अनियमितताएँ देखने को मिलती हैं|
- ऐसे बालक में नेतृत्व करने के गुण पाये जाते हैं|

अधिगम अक्षता के प्रकार

मनोवैज्ञानियों, स्नायुतंत्र विशेषज्ञों तथा फिल्म 'तारे जमी पर' के दृष्टिकोंण से अक्षमता को पाँच प्रकार की श्रेणी में रखा जा सकता है|

अफेसिया: इस प्रकार की अधिगम अक्षमता में श्रवण बालक के अन्दर भाषाश्रवण दोष होता है| अर्थात कक्षा में पढ़ने वाले शिक्षक की बात को हु-ब-हु ग्रहण नकरते हुए शिक्षक द्वारा उच्चारित शब्द अथवा वाक्य को दूसरे रूप में श्रवण कराते हैं| विशेषकर मातृभाषा से हट कर दूसरी भाषा का अध्ययन करते समय।

कारण

- श्रवण शक्ति दोष
- भाषा अध्यापक द्वारा क्लिष्ट शब्दों का प्रयोग
- स्थानीय भाषा का अलग होना
- मातापिता- द्वारा स्थानीय बोली का सर्वाधिक प्रयोग
- उच्चारण दोष

डिसलेसिया :- इस प्रकार की अक्षमता में बालक में शब्दों एवं वाक्यों को हु-ब-हु पढ़ने में कठिनाइयों का सामना करना पढ़ता है। यह दोष मूलत: बाल्यावस्था में समाजीकरण की प्रक्रिया के दौरान स्थानीय लोगों द्वारा बोल चाल की बोली के प्रयोग के कारण होता है| जैसे पंजाब प्रांत में पला-बढ़ा बालक'स्कूल' को सकूल, महाराष्ट्र में पला-बढ़ा बालक'गणित' को गनित,मध्यप्रदेश के मालवा प्रांत में पला-बढ़ा'शक्कर' को हक्कर , 'पत्थर' को 'फत्थर','शहद' को 'सहद' का उच्चारण करने का अभ्यस्त होने के कारण बड़ी कक्षाओं में भी त्रुटि करता है|

कारण:

- उच्चारण दोष।
- स्वराघात शक्ति का अभाव।
- प्रारंभिक कक्षा में शुद्ध उच्चारण पर ध्यान न दिया जाना।
- स्थानीय बोली को सर्वाधिक महत्व।
- क्षेत्रीयता को अधिक महत्व देना|

डिसकैलक्यूलिय :- जैसा की नाम से स्पष्ट है की इस प्रकार के अक्षमता रखने वाले बालक गणितीय

त्रुटि जैसे गुणा, भाग, जोड़ अथवा घटाने के क्रम को या तो भूल जाते हैं अथवा उल्टासीधा कर देते है अथवा करने के आदि हो जाते हैं|

उदाहरणार्थ गुणा करते समय - ९x३ = २७ के स्थान पर कुछ और लिख देना, जोड़ते अथवा घटाते समय - १३५६ + ३२९१ को दाहिने तरफ के स्थान पर बायेँ तरफ से जोड़ अथवा घटा देते हैं| भाग वाले सवाल कराते समय विभाजित संख्या के स्थान पर भाज्य अथवा एक दूसरे के विपरीत भाग कर देते हैं|

कारण :-

- गणितीय क्षमता का अभाव
- प्रारंभिक शिक्षण के समय शिक्षण का गलत तरीके से गणित लिखना
- स्नायुतंत्र को गड़बडी
- बालक की उत्श्रंखलता
- प्रारंभ में गितनी- पहाड़े का मातृभाषा में लिखना तथा बाद में अंग्रेजी में प्रयुक्त करना|

हाइपरलेक्सिया :- इस प्रकार की अक्षमता वाले बालक शब्दों अथवा वाक्यों को बहुत कम या बिलकुल भी नहीं समझ पाते हैं| श्यामपट पर लिखे गए शब्द ऊपर - नीचे दिखाई देते हैं|

कारण:

- काँच के श्यामपट पर प्रकाश पड़ना
- आँखों का निकट दृष्टिदोष|
- दोनों प्रकार के दृष्टिदोष होना|
- कक्षा में असुविधाजनक बैठक व्यवस्था|
- उपयुक्त दूरी से कम अथवा अधिक दूरी पर बैठना|

डिसग्राफिया :- इनमें मुख्यत:अक्षर की पहचान, जैसे व और ब,'ग्रह' और 'गृह', स और श आदि का उच्चारण एवं लेखन दोष पाया जाता है|

कारण :- उपरोक्त चारों अक्षमता में से अधिक अक्षमता की उपस्थिती के कारण डीस्ग्राफिया अक्षमता उत्पन्न होती है|

निदान कक्षा शिक्षण के दौरान इस प्रकार की समस्या से प्रभावित बालक शिक्षक के संपर्क में आता है, तो एक मार्ग दर्शक के रूप में इस प्रकार से उपरोक्त

समस्या का निदान किया जा सकता है

श्रवण शक्ति कमजोर होने से बालक को अनेक मानसिक कठनाइयों का सामना करना पड़ना है, अत: कक्षा के किसी बालक में ऐसा गुण पाए जाने पर सबसे पहले उसकी श्रवण शक्ति की पहचान करानी चाहिए|इसके लिए शिक्षक को चाहिए कि वह श्यामपट के ठीक सामने वाली दीवार के पास बालक को खड़ा करें तथा स्वयं फुसफुसाना सुरु करें|अब बालक से पूछें कि फुसफुसाहट सुनाई देती है या नहीं| जैसे ही बालक 'हां' कहे, उससे दो-तीन कदम आगे उसके बैठन कि व्यवस्था कर दें|

विद्यालय के अन्य शिक्षकों कों भी इस प्रकार कि समस्या से अवगत कराएं|

अन्य शिक्षक साथियों से निवेदन करें कि उक्त कक्षा में निर्देशन अथवा शिक्षण कराते समय ऐसे छात्र के पास खड़े होकर अथवा सामान्य दूरी पर से ही निर्देश अथवा शिक्षण कार्य सम्पन्न करें तथा स्वयं भी इसका अनुपालन करें|

कक्षा के अन्य बालकों को संवेदी बालकों से दोस्ती करने तथा साथ खेलने के लिए प्रोत्साहित करें|

विद्यालय में यदि मौखिक मूल्यांकन कि व्यवस्था है, तो ऐसे बालकों कि मौखिक मूल्यांकन की चेष्टा करें|

ऐसे बालकों के माता पिता को विद्यालय में बुलाकर अधिगम अक्षमता से अवगत कराए तथा यथोचित मार्गदर्शन दें|

हम शिक्षक साथियों की थोड़ी सावधानी तथा तत्परता से अधिगम अक्षम छात्रों का भविष्य सुधर सकता है |

अलेक्जेंडर ग्राहम बेल: लर्निंग डिसेबिलिटी से टेलिफ़ोन तक की सफ़र

जुलाई, 1876. अमेरिका फिलाडेल्फिया में अपनी स्वतंत्रता शताब्दी समारोह मना रहा था। समारोह में अन्य आयोजनों के साथ विभिन्न आविष्कारों के प्रदर्शन का भी प्रबंध था। आविष्कारों की श्रेष्ठता और मौलिकता की जांच के लिए एक निर्णायक मंडल का गठन भी किया गया था। विलियम थाम्पसन तथा जोसेफ हेनरी जैसे नामी-गिरामी भौतिकीविदों के अलावा इस निर्णायक मंडल में ब्राजील के सम्राट डॉम पेद्रो, जो उस समारोह के विशिष्ट अतिथि थे, वे भी शामिल थे।

निर्णायकों ने विभिन्न स्टालों पर जाकर आविष्कारों को देखा-परखा। पर अत्धियाक गर्मी के कारण जल्दी ही वे थक गए। तय हुआ कि बाकी आविष्कारों को अगले दिन देखा जाए। पर तभी सम्राट पेद्रो की नजर एक लम्बे और दुबले-पतले से दिखने वाले युवक पर पड़ी। एक वर्ष पूर्व ही बोस्टन के गूंगे-बहरों के स्कूल में उनकी मुलाकात इस युवक से हो चुकी थी। उस युवक को वहां देखकर सम्राट ने यह जानना चाहा कि वह यहां किसलिए उपस्थित है। उस युवक ने सम्राट को अपने आविष्कार के बारे में बताकर कहा, 'मगर अफसोस! थकान कारणवश मुझे कल ही फिलाडेल्फिया छोड़ना पड़ रहा है। निर्णायकों को मेरा आविष्कार देखने का मौका ही नहीं मिल पाएगा।'

उस युवक को इस तरह निराश देखकर सम्राट ने तपाक से कहा पर क्यों नहीं मिलेगा मौका? हम अभी देखेंगे आपका आविष्कार। कहना होगा कि बाकी

The Daily Gazette

March 7, 1876 — Telstra Special Promotion

ALEXANDER GRAHAM BELL INVENTS THE TELEPHONE.

IN AN EXTRAORDINARY WORLD FIRST, Scotsman Alexander Graham Bell has invented a device that converts the human voice to electricity and allows people to talk to each other down an electrical wire over long distances.

It promises to be one of the most important advances in the history of communications, making things like all that dot-dot-dash-dash code or stretching a piece of string between tin cans obsolete almost overnight. Bell had been "fiddling around with sound and electricity stuff for quite a while", according to a well-placed source. "It was difficult to get him out for a beer, game of cards, or antler carving competition as he got a real bee in his bonnet about making a huge historical impact with this telephone-invention stuff".

• • •

BELL-MEISTER OR TINKER

Belly, the Bell-meister, or Tinker, as he is variously referred to by friends, had worked for many years in the fields of speech and hearing, but really wanted to invent a phone because nobody had one. "There can't be many people who haven't sat at home and wanted to ring a friend or relative to say hi, then realized they couldn't because telephones didn't exist. It's certainly annoyed me over the years so I thought I'd do something about it."

Bell also claims it is only a matter of time before you'll be able to use the new device to talk to people on the other side of the world. "You'll simply pick up the phone in New York, dial a number, and be answered by someone in Rome, for example.

They won't have a clue what you're saying, because they speak Italian over there, but it will still be an amazing feat of technology.

Just don't try and ask them the time, as theirs is different to ours apparently...plus they use V's and X's in their numbers which can throw you a bit if you're not used to it."

The telephone will be a huge success, once people work out which end to talk into and how to answer it without getting splinters.

WATSON POINTED OUT

Bell was also keen to hose down suggestions that the name "telephone" was a bit boring and wouldn't stand the test of time. "Watson and I kicked around quite a few ideas for the name. I thought 'Bell' was quite a good name for it, until, Watson pointed out, and rightly so, that there was already a thing called a bell, so that it could have been a bit confusing. He of course suggested the 'Watson', which I point-blank refused.

'Magic Voice'

We had the 'Electro-talker', the 'Voice-wire'...gosh, even the 'Magic Voice' got a bit of a run for a while but then I decided it made it sound a bit oogity-boogity...you know, a bit spooky. Eventually we stumbled on 'telephone' and having lived with it for a while it seems to have stuck. Mind you," said Bell with a roll of his eyes," Watto started this rave about how wrong it was that the word phonetic is spelt with a ph and not an f, but when he gets like that you just have to back-off and give him some space. We all know what inventor's assistants can be like at times."

• • •

Alexander Graham Bell - Inventor.

"Quickly builds second one so he has someone to ring."

Following his breakthrough invention of the world's first telephone, Alexander Graham Bell has wasted no time in making a second one. "At first i thought I'd made a mistake with the invention" he said "as it initially didn't seem to be working. Then I realised that I'd need another one if I was going to be able to call someone, so it was back out to the shed for a bit more tinkering."

"relatively easy"

Bell described building the second one as "relatively easy" as he simply copied what he had done the first time. "It only took a couple of hours, although I did have a problem finding a suitable piece of wood for the base of the thing" he said.

BREADBOARD

"Luckily there was a breadboard in the kitchen that was exactly the right size – hopefully Mrs Bell won't notice. If she needs to start slicing some raisin toast when I'm halfway through a call, things may get a bit testy."

दोनों निर्णायकों विलियम थाम्पसन और जोसेफ हेनरी को भी सम्राट की बात माननी पड़ी।

सबसे पहले सम्राट पेद्रो ने ही यंत्र को परखने के लिए चोगे को हाथ में उठाया। दूसरे सिरे पर स्वयं वह युवक था। शेक्सपियर के हेमलेट के कुछ चुने हुए अंशों को उस युवक ने सम्राट को अपने द्वारा आविष्कृत यंत्र के माध्यम से कह सुनाया। सुनकर आश्चर्य और खुशी से सम्राट चीख उठे, 'अरे वाह! यंत्र तो बाकायदा बोलता है।'

बाकी दोनों निर्णायकों ने भी एक के बाद एक उस 'बोलने वाले यंत्र' का परीक्षण किया। सम्राट पेद्रो ने वहां उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा, यह एक ऐसा चमत्कारी आविष्कार है जो दुनिया भर के लोगों के जीने का तौर-तरीका ही बदल देगा।'

अगले रोज न्यूयार्क से प्रकाशित होने वाले 'ट्रिब्यून' अखबार ने इस युगांतकारी आविष्कार के बारे में काफी विस्तारपूर्वक छापा। यंत्र को अखबार ने युग का सबसे उपयोगी और सबसे महत्वपूर्ण आविष्कार बताया। फिर तो देखते-देखते उस युवा आविष्कारक की ख्याति चारों तरफ फैल गई।

वह युवक कोई और नहीं बल्किअलेक्जेंडर ग्राहम् बेल और आविष्कृत यंत्र था टेलीफोन। 3 मार्च, 1847 को एडिनबर स्कॉटलैंड में बेल का जन्म हुआ था। उनके पिता अलेक्जेंडर मेलविल बेल बधिरों के शिक्षक थे। दृश्य वाणी प्रणाली नामक एक विशेष प्रणाली का उन्होंने विकास किया था जो दोषपूर्ण उच्चारणों को शुद्ध करने में बड़ी कारगर थी। तुतलाते लोगों और गूंगे-बहरे बच्चों के लिए यह प्रणाली काफी उपयोगी थी। थोड़ा बड़े और समझने लायक होने पर ग्राहम बेल और उसके दोनों भाइयों को पिता मेलविल बेल ने स्पीच सिस्टम पर कार्य करने का प्रशिक्षण दिया। और धिरे-धिरे तीनों भाई अपने पिता के कामकाज में हाथ बंटाने लगे। इस तरह बचपन में ही खिलौनों की जगह ध्वनि के साथ खेलने का जो सिलसिला शुरू हुआ वह लगता है बेल के अचेतन मन में कहीं गहरे पैठ कर गया। संभवतया इसी ने कालांतर में उन्हें टेलीफोन के आविष्कार के लिए प्रेरित किया होगा। वैसे ध्वनि के प्रति बेल के इस रूझान को वंशानुगत भी माना जा सकता है क्योंकि उनके पितामह भी वाणी या उच्चारण संबंधी शिक्षण कार्य से ही जुड़े थे।

बेल को एडिनबरा के हाई स्कूल में शिक्षा ग्रहण करने के लिए भर्ती कराया गया। यहां से सफलतापूर्वक अपनी पढ़ाई पूरी करके लंदन यूनिवर्सिटी से बेल ने अपनी स्नातक की पढ़ाई पूरी की। पढ़ाई का खर्च चलाने के लिए बेल को कभी-कभी बधिरों के स्कूल में पार्ट टाइम नौकरी भी करनी पड़ी थी।

जब सन् 1860 का दशक अपनी समाप्ति पर था तो ऐसे में बेल के परिवार पर मानो अचानक गाज गिर पड़ी। बेल के दोनों भाई क्षय रोगों से पीड़ित होकर चल बसे। स्वयं बेल में भी रोग के लक्षण दिखाई पड़े। यह देखकर चिकित्सकों ने आबोहवा बदलने की राय दी।

अपने एकमात्र जीवित बचे बेटे की सलामती के लिए बेल के पिता अपनी जमीन-जायदाद बेचकर 1870 में लंदन छोड़कर कनाड़ा चले आए। कनाडा की शुद्ध हवा में सांस लेने से बेल की सेहत में तेजी से

सुधार हुआ और उन्हें क्षय रोग से मुक्ति मिल गई।

एक वर्ष आराम करने के बाद 1871 में बेल अमेरिका के बोस्टन शहर में चले आए। यहां गूंगे-बहरों के लिए चलाए जाने वाले 'बोस्टन स्कूल ऑफ द डैफ' में उन्हें नौकरी मिल गई। बधिरों को पढ़ाते हुए बेल के दिमाग में अपने पिता के 'विजिबल स्पीच सिस्टम' को उन्नत बनाने का विचार आया। वह एक ऐसा यंत्र बनाने के प्रयास में जुट गए जिसमें मुंह से बोली हुई आवाज की तरंगों स एक चुम्बकीय सुई कम्पित होने लगे ताकि उसके कम्पनों को देखकर यह समझा जा सके कि क्या कहा गया है।

आविष्कारों में जुटे रहने के आलावा बेल ने भूगोल और अण्वेषणों के लोकप्रियकरण की दिशा में भी कार्य किया था। उन्होंने 1888 में नेशनल जियोग्राफिक सोसाइटी की स्थापना की थी 1898 से लेकर 1903 तक वह जिसके अध्यक्ष रहे।

बहरेपन के स्वरूप् और कारणों के अध्ययन को प्रोत्साहन देने के लिए बेल ने 'सांइस' नामक एक विज्ञान पत्रिका भी शुरू की थी। वाशिंगटन डी सी स्थित स्मिथसोनियन संस्थान में एक खगोलभौतिकीय वेधशाला की स्थापना भी बेल द्वारा प्रदत्त अनुदान द्वारा ही हो पाई थी।

इस महान आविष्कारक की 2 अगस्त, 1922 को मृत्यु हुई। उन्हें श्रद्धांजली अर्पित करने के लिए अमेरिका भर की सभी टेलीफोन लाइनों को कुछ काल के लिए मौन रखा गया था।

अलेक्जेंडर ग्राहम बेल को पूरी दुनिया आमतौर पर टेलीफोन के आविष्कारक के रूप में ही ज्यादा जानती है। बहुत कम लोग ही यह जानते हैं कि ग्राहम बेल ने न केवल टेलीफोन, बल्कि कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में कई और भी उपयोगी आविष्कार किए हैं। ऑप्टिकल-फाइबर सिस्टम, फोटोफोन, बेल और डेसिबॅल यूनिट, मेटल-डिटेक्टर आदि के आविष्कार का श्रेय भी उन्हें ही जाता है। ये सभी ऐसी तकनीक पर आधारित हैं, जिसके बिना संचार-क्रांति की कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

“भाषा एवं साहित्य से जुड़े वरिष्ठ दंपति को सलाम”

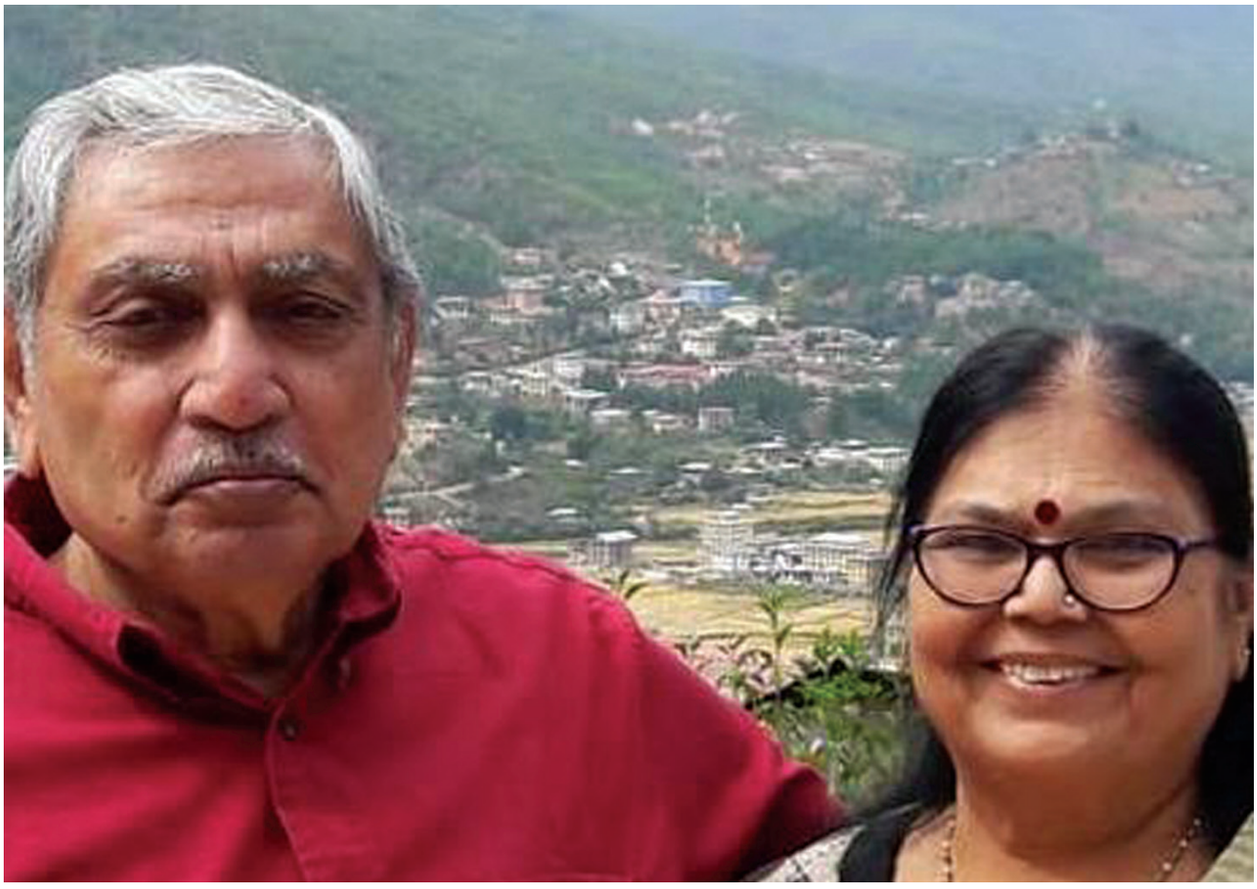

राबता | कुंजल प्रदीप छाया

हम किसी भी सफल व्यक्ति की जीवनी पढ़कर या उनके बारे में जानकर बहुत ही प्रेरित हो कर सोच-विचार करने लगते है। अगर वह व्यक्ति किसी शारीरिक तौर पर दिव्यांग हो, या कोई बीमारी से उन्होंने अपने आपको स्वस्थ किया हो तो वह व्यक्ति और भी ज्यादा सम्माननीय और तारीफ़ के काबिल होता है।

सांसारिक जीवन में यह कहा जाता है कि दंपति एक दूसरे के साथ कदम से कदम मिलाकर चलते हैं। वे दोनों जीवनरथ के एक साथ समांतर चलते हुए पहिये हैं। ऐसे में कोई एक कदम भी कमजोर या लडखड़ा जाए तो? वह जीवनरथ आगे नहीं बढ़ सकता। इसी कारण ऐसे दंपति के बारे में जानकर और उन्हे पहचान कर गर्व व खुशी होती है, जो एक दूसरे की कमजोरी नहीं बल्कि एक दूसरे के हम-कदम बनकर जीवनरथ की आदर्श जोडी बने रहतें है।

एक लंबे अरसे से एक दूसरे का हाथ थामकर चलते हुए, उम्र का एक तकाज़ा जिन्होंने साथ में ही तय कर लिया हो, ऐसे वरिष्ठ उम्र के प्रेरणादायी दंपती से मिलकर हमें बेहद खुशी व गर्व महसूस हो रहा है।

लगता है कि जैसे हमने खुद ही उनके साथ एक लंबी सफर की हो। आपको भी उनके बारे में जानकर उतनी खुशी और ताज़गी महसूस होगी जितनी मुझे हो रही है, उनकी पहचान लिख कर। जिंदगी का सबसे अनमोल नज़रिया है प्यार, वही एक चीज है जो मुश्किल दौर में भी आपको कडी से कडी मंज़िल पर चलने के लिए होंसला देती है।

अहमदाबाद के रहनेवाले श्री जनकराय शाह और उनकी पत्नी श्रीमती भारतीबेन शाह| उम्र के लगभग चालीस साल एक दूसरे के साथ हर सुख दु:ख की परीक्षाएं देकर अनुभव लिये बैठे है| शैक्षणिक, सामाजिक एवं पारिवारिक तौर पर जहां भी गये, जो भी कार्य किये, उसमें अपनी संपूर्ण निष्ठा और सेवाभाव से आदर प्राप्त किया।

अंग्रेजी भाषा के प्राध्यापक जनक साहबने 'सीन एन्ड क्राईम वीथ रेफरेन्स टू डोस्टोर्यस्कीज़ मेजर लिटररी वर्क' जैसे गंभीर विषय पर 'डोक्टरेट ओफ फिलोसोफि' की पदवी हांसील की है। उन्होंने अंग्रेजी भाषा के प्राध्यापक के तौर पर लगभग ३३ साल छात्राओं को आत्मीयता से पढ़ाया। गुजरात के अहमदाबाद के करीब सुरेन्द्रनगर नामक शहर में उनका जन्म और वहीं उनकी प्राथमिक शिक्षा शुरू हुई।

जीवनी

एक बालक जो बहुत ही चंचल और हसमुख स्वभाव का हो, जो अपनी तेजस्विता से सभी को अपने अभ्यास काल में प्रभावित करता हो। वह अपने भाई और दोस्तों के साथ गांव में शाम के समय इमली के पेड़ पर चढ़कर खेल रहा हो और अपने साथियों के साथ खूब धूम मचा रहा हो, अचानक से वह गिर जाता है, और उसने पेड़ पर से अपना समतुलन खोया और पैर राजमहल की चारों और लगी लोहे की कील जैसी फैन्सिंग चूभ गयी। महीनों तक उसका अस्पताल में इलाज हुआ। ६ या ७ साल का प्रभावशाली लड़का अपने माता पिता को खुद ही आश्वासन देता रहता कि मेरी चिंता मत किजिये, देखना एक दिन मैं ठीक हो जाऊँगा।

पैर के इलाज में वक्त लगा, उसकी पढ़ाई को भी हानि पहुंच रही थी। शुरु में केलिपर्स पहन कर चलने की कोशिश की, फिलहाल वे प्लेटफॉर्म हिल के खास बनावट के जूते पहनते है जिससे उनके दोनो पैर एक समान लंबाई के लगे। हाथ से पकडे जाने वाली क्रेचिस भी उनकी सहायता करने लगी। धीरे धीरे उन्होंने अपना पूरा ध्यान अभ्यास की और लगाया और उच्च शिक्षा प्राप्त की। अपने ही गांव की प्राथमिक शाला में शिक्षक के तौर पर अपनी व्यावसायिक सफर का आरंभ किया। साथ ही उन्हों ने गांधर्व महाविद्यालय से संगीत में अभिरूचि के आधार पर वायोलिन वादन में विषारद किया है।

दूसरा पहलू

एक भारतीय स्वातंत्र सेनानी की आदर्शों और संस्कारों से समृद्ध परिवार की बेटी, भारती जी से उनका विवाह हुआ। हिन्दी भाषा की शिक्षिका रह चुकी है और जनक साहब के साथ उनकी साहित्यिक प्रवृत्तियों में भी पूरा साथ देती है। आज लगभग पैंसठ – सत्तर साल का यह युगल हमें यह अनुभव कराता है कि स्नेह से जुड़ा संबंध एक खास आयाम तक किसी भी परिस्थिति और मुश्कील हालात में भी सुख और प्रेरणात्मक बना सकता है।

उन दोनो ने मिल कर अनेक अंग्रेजी भाषा एवं गुजराती भाषा में अनुवादित प्रेरणात्मक कहानी लेखन किया है और उसकी पुस्तकें भी प्रकट की है। उन्होंने इन्डोर गेम्स के उपर अभ्यास कर के नये नये खेल के बारे में एक पुस्तक भी लिखी है। 'अंधारी अमास ना तेजस्वी तारला' नामक पुस्तक को गत वर्ष गुजरात साहित्य अकादमी एवोर्ड से भी नवाजा गया। विचार विज्ञान नामक त्रिमासिक सामयिक में वे मानद सेवा दे रहे है, जिसमे दिव्यांग व्यक्तियों की प्रेरणात्मक कहानियां प्रकाशित होती है। संगीतज्ञ है और भाषा साहित्य में भी नई पीढ़ी को मानद मार्गदर्शन देते है। अपने घर में बेटा, बहु और पोते के साथ मुस्कुराहटों से भरे परिवार में बैठे देख कर उन्हे नतमस्तक स्नेहादर करने को जरूर मन हो जाता है।

ज़रा सा हौंसला

कुंजल प्रदीप छाया

ग़म का ख़ज़ाना तेरा भी है, मेरा भी,
ये नज़राना तेरा भी है, मेरा भी...

यूं तो हम किसी भी गाने को यूहीं गुनगुना लेते है। शायद गानों में ही कोई ऐसा आकर्षण होता है की हम उनको सहज अपने दिमाग में बसा लेते है। हालांकि हमें मालूम भी नहीं होता की कब कोई गाना हमको मुंह पर रह गया ! कोई नज्में रूह छू लेती है तो किसी गजल को सून कर जी में सूकुन सा छा जाता है। संगीत कि धुन आपको चैन से बैठने का बहाना दे देती है। कुछ ऐसी ही पंक्तियां आज ज़ुबान पर आने लगी जब गम और ख़ुशियों के बारे में सोचने को जी कर रहा था।

आज सारी दुनिया एक सामूहिक चक्र में उलझ कर जैसे ढह रही है। मानो सब के वाहनों में नहीं उनके पैरों में पहिये पहना दिये हों! दौडभाग करती जिंदगी आराम से कैसे बैठे? क्यों बैठे? बैठकर करे भी तो क्या? अगर निवृत्त होकर हर कोई बैठ गया कोई तो अपने दिमाग में हजारों ख्यालात पाल लेगा। उन विचारों में सकारात्मकता होने की बहुत ही कम संभावना है क्युं कि हमारे आसपास का वातावरण न जाने क्यों कलुशित होता जा रहा है। शायद वो दिन अब दूर नहीं कि हमें खुश रहने के लिये भी कोई दवाई लेनी पडे। हमारे चारों ओर ऐसा माहोल खड़ा होता जा रहा है ज़हां हमे सचमुच में खुशी ढूंढने पर भी मुश्कील से मीले। एक दूसरे के प्रति अविश्वास एवं हर एक के संबंधों पर शंकाशील होना हमारा स्वभाव सा होता जा रहा है।

जीवन के किसी भी पहलू में अगर छोटी सी कोई मुश्किल आन पडे तो हम धबरा से जातें है। एसा मेरे साथ ही क्यों हुआ यह प्रश्न हम ईश्वर से या फ़िर अपने लोगों से पूछ बैठते है।

सड़क से गुज़रते हूए या रास्ता क्रॉस करते हुए किसी गाड़ी से टकरा जाते है, हम उस वाहन चालक का दोष ढूंढतें है, न की हम यह सोचे की यदि ऐसा भी तो हो सकता है की शायद हम रास्ता देख कर न चले हों ! किसी डॉक्टर से गलती हुई और हम ज़्यादा बीमार पड गये ऐसा सोच लिया। पर हमने ही खानपान में परहेज़ नहीं रखा ये हम नहीं देखते। वजह चाहे जो भी हो हम अपनी अवदशा का बोज़ ओरों पर लाद देंतें है। अगर किसी व्यक्ति या परिस्थिति हाथ न लगे तो हम सब अपने भगवान को ही दोषीत मान लेते है और पूरी तरफ़ से सही मानकर चलते हैं की हमारे ही नसीब में यह मुश्किल खड़ी हुई है। बाकी हर कोई खुश है, खुशनसीब है। सिर्फ में ही गम में हुं।

ऐसा इसीलिए लगता है क्यों की हमे अपना ही प्रतिबिंब बड़ा और ज़्यादा करीब लगता है।

मानवता के दूरबीन से देखें तो हर एक के जीवन में कोई ना कोई तकलीफ है, हर कोई अपनी मुश्किलों का रास्ता खोजने की कोशिशों मे खोया हुआ है।

मैं ही क्यों? यह प्रश्न आप सिर्फ अपने आप से पूछे !

आपको तुरंत ही जवाब मिलेगा आप इस मुश्किल में हैं क्यों की आप इस मुश्किल से उबर कर खड़े रहने के लिये सक्षम हैं। आपकी नियति को पता है की आप जीतने मुश्किल हालातों से गुजरेंगे आप उतने ही उमदा व्यक्ति के तौर पर निखरतें जायेंगे।

गम सब के पास है, खुश सभी कोई रहेना चाहता है, जो व्यक्ति जो महसूस करता है, उसके पास वोह अहसास ज़्यादा होता है। सभी ईन्सानों को खुश रहेना भी उतना ही आवश्यक है जीतना एक बीमार के लीए दवाई !

खुशीयों के नज़रानों का लुफ्त उठाना सभी का हक है और सब का यह फर्ज़ भी है की उनकी जिंदगी हंसी खुशी जीए, गम के अश्क निकलें भी तों उन्हे सूरीलें गीत गुनगुना कर हँसते हुए बहा देना। मुश्किलें सामने आए तो डटकर उनका मुकाबला कर लेना और जीवनपथ पर आने वाली खुशहाली का बांहें पसारे आह्वान कर लेना।